धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

मई 2008

- पाठकों के विचार
  - क्या आत्मा नाम की कोई चीज़ है?
    - सम्बन्धों में ही जीवन है।
      - हमारी हालत
    - निर्भयता से सच्चाई का साथ दो
  - बेटी का स्थान
- शुभ संग्राम

पाठकों के विचार

मेरे विशेष श्रद्धा के योग्य उपकारी श्रीमान जी सत्य देव की जय। मैं फिर परदेसी हो गया हूँ। अपनी प्यारी जन्म भूमि तथा उपकारी देव समाज से दूर यहां आ कर कैद हो गया हूँ। परन्तु यह फांसी का फंदा मैंने स्वयं ही अपने गले में डाला है और अब स्थिति यह है कि चाहते हुए भी हालात के हाथों मजबूर मैं इस कैद से आजाद नहीं हो सकता। श्रीमति जी किसी कीमत पर भारत नहीं जाना चाहती बच्चे उन्हें अकेली को रखते नहीं और फिर इधर मैं भी अकेला कैसे रहूँगा। इस बार 100 दिन तीर्थ यात्रा के ही रहे। पहले फरीदाबाद में विकासालय का सत्संग तथा फिर श्री अकबर पुर की तीर्थ यात्रा और पवित्र पर्वत आश्रम सोलन के दर्शन दो तीन बार बठिण्डा के ऐतिहासिक मन्दिर में श्रद्धेय ज्ञान वत्ती जी की सभाएँ, मोगा तथा अम्बाला, पूहला व महराज के दर्शन। बस कल्याण सत्संग का अवसर न मिल सका।. महोत्सव के बाद ही विकासालय का सैशन और फिर जनवरी में भी विकासालय का सैशन attend करने का सौभाग्य मिला। माननीय सुरजीत बहन जी तथा डॉ. खेड़ा जी के पब्लिक लैक्चर तो कमाल के थे जिन्हें सुन कर दिल धन्य-धन्य हो गया। आप की तथा माननीय बलबहादुर जी की सभाएं सुनने का शुभ अवसर न पा सका। परन्तु धर्म जीवन और हितकर अखबारों में महोत्सव की कारवाई को Detail में पढ़कर बहुत लाभ हुआ। श्रीमान जी 2005 के महोत्सव की तरह ही इस बार भी देव धर्म मिशन के भाव प्रकाश पढ़ कर दिल आप के आगे नत मस्तक हो गया कि सचमुच आप परम पूजनीय भगवान देवात्मा जी के कारज की जो सर्वोच्च सेवा कर रहे हैं वह आप के आगे मुझे बार-बार नत मस्तक कर रही है। अक्तूबर 2007 से फरवरी 2008 तक के सब अखबार यहां पर आकर तो ऐसा लगा जैसे Refresher Course हो गया। उस के लिये आप की सारी टीम तथा उसके कप्तान आप के लिये विशेष श्रद्धा के भाव जागे हैं। ऐसी शुभ कामना है कि आप की दीर्घ आयु हो जो आप परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव प्रभाव दूर-दूर तक फैला रहे हैं। आप तन मन धन से गुरू मिशन के लिये फना हो रहे हैं। मैं आप का सजदा करता हूँ। आत्मिक सेवाओं के साथ मैं आप के हां स्वादिष्ट भोजन की सेवाएँ पाता रहा हूँ। कई बार आप के हाँ स्वादिष्ट भोजन खाया उस के लिये भी मैं आप का बहुत अभारी हूँ।

श्रीमान जी आप हमारे परिवार के साथ बहुत निकट का परिवारिक सम्बन्ध रखते हैं यह मुझ तुच्छ के लिये गौरव की बात है।

आप से देव समाज के बारे में हितकर बातचीत भी होती रही और अब भी मैं नित्य प्रति यह ही शुभ कामना करता हूँ कि काश देव समाज एक ही झंडे तले इकट्ठी होकर सब मिलजुल कर परम पूजनीय भगवान देवात्मा के अद्वितीय कारज को ज्यादा से ज्यादा फैलाकर सच्चे पूण्य के भागी बने। नेचर का विकासकारी विभाग तथा सहायकारी शक्तियां इस कारज में सहाय हो यही शुभ कामना है। बहन सुरजीत जी को सत्य देव की जय। एक बार फिर सब सेवाओं के लिये मैं आप के आगे नत मस्तक हूँ।

आप का कृतज्ञ

तथा उपकृत तुच्छ वसन्त लाल

धर्म जीवन

खण्ड 20 अंक 5

मई 2008

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

क्या आत्मा नाम की कोई चीज़ है?

आत्मा शब्द प्राचीन समय से हिन्दु, धार्मिक ग्रन्थों में पाया जाता है। कई धर्म मत ऐसे हैं कि जो परमात्मा या ईश्वर की वर्तमानता को नहीं मानते परन्तु कोई भी ऐसा पुरातन धर्म मत नहीं, जो आत्मा को नहीं मानता हो। अब हम इसी पर विचार करेंगे कि क्या सचमुच आत्मा नाम की कोई चीज़ है? यदि है तो उसका सच्चा स्वरूप क्या है?

आत्मा के स्वरूप के बारे में अनेक धारणाएं हैं। साधारण जन समूह (ईश्वरवादी) यह विश्वास करते हैं कि आत्मा एक असीम आत्मा का अंश है, जिसको परमात्मा कहते हैं। कुछ कहते हैं आत्मा पार ब्रह्मा का रूप है। एक विचार है कि आत्मा शब्द रूप है। एक विचार यह है कि खुदा का हुक्म है। कई विचारशील यह विश्वास करते हैं कि आत्मा खुदा की फूंक है। इस प्रकार की कोई चीज़ नेचर में है ही नहीं। उपरोक्त सब कथन बेआधार, झूठे और पूरे कल्पित हैं। सच्चाई यह है कि विश्व के भीतर जो मसाला है, प्रत्येक वस्तु उससे बनी है। यदि आत्मा नाम की कोई चीज़ है तो उस मसाले से ही बनी हो सकती है।

आज तक विज्ञान ने विश्व के सम्बन्ध में यह ज्ञान दिया है कि विश्व के भीतर दो ही पदार्थ हैं एक जड़ और दूसरी शक्ति है। विश्व के भीतर सारे अस्तित्व बड़े, छोटे, जीवित चाहे अजीवित, सब इन दोनों पदार्थो से बने हैं। Matter अर्थात जड़ पदार्थ की सत्ता को नकारा नहीं जा सकता। Energy शक्ति की सत्ता भी नकारी नहीं जा सकती। शक्ति के बिना किसी किस्म की motion वा गति नहीं हो सकती। और गति के बिना परिवर्तन नहीं होता। पदार्थ स्थूल व सूक्ष्म दोनों प्रकार के हैं, परन्तु शक्ति केवल सूक्ष्म होती है, आँखों से ओझल होती है। इसका प्रभाव या कार्य इसकी वर्तमानता का प्रमाण है। विज्ञान ने अनेकों भौतिक शक्तियों का ज्ञान प्राप्त करके, उन्हें उपयोग में लाया है।

विश्व के भीतर जीवन तीन प्रकार का है। वनस्पति अर्थात् पौधे, जीव, जन्तु, पक्षी और तीसरा है मानव जीवन विकासवाद के सिद्धान्त से पहले मनुष्य ने जीवन के सम्बन्ध में अनेकों अटकलें लगाई हैं। विकासवादियों ने तथ्यों के आधार पर यह सिद्धान्त खोजा है कि जीवन की बेजान पदार्थो वा शक्ति से धीरे-धीरे उत्पत्ति वा विकास हुआ है। सबसे अधिक प्रमाणित सिद्धान्त जीवन के विषय में विकासवाद का ही है। विश्व के भीतर जहां और जब भी जीवन को विकसित होने की अवस्था बन जाती है, तो जिन्दगी

का विकास होना शुरू हो जाता है, तो जीवन की प्रारम्भिक रूप से शुरूआत हो जाती है, तो अनुकूल परिस्थितियों में जीवन का विकास होता रहता है। एक सैल से जीवन शुरू होकर बहुसैल बनता है। नये से नये, गुझंलदार रूप में विकसित होता जाता है। यह प्रक्रिया सदा जारी रहती है, क्योंकि शक्ति हमेशा गति पैदा करती रहती है, या गति पैदा करने में प्रयत्नशील रहती है। शक्ति का स्वभाव गति वा परिवर्तन करना है।

प्रत्येक स्तर के जीवन के कुछ प्रारम्भिक लक्ष्ण होते हैं। अर्थात् जीवनी शक्ति अपने लिए शरीर का निर्माण करती है। दूसरा गुण यह है शरीर की पालना करती है। तीसरे शरीर को चलाने या संचालन का काम करती है। चौथा गुण या स्वभाव है, वह शरीर को जीवित रखने के लिए प्रयत्नशील रहती है। पांचवां प्रारम्भिक गुण है, अपने जैसे और जीवनधारी पैदा करना। पौधों वा पशुओं की जीवनी शक्तियां भी यही लक्षण प्रदर्शित करती हैं। मनुष्य जीवन के भी यही लक्ष्ण वा गुण हैं।

जैसे भौतिक शक्तियों की सत्ता अर्थात् गर्मी की शक्ति, ऐटमी शक्ति, चुम्बकीय शक्ति, बिजली की शक्ति को नकारा नहीं जा सकता। उसी प्रकार जीवन शक्ति को वा उसके कारज को, चाहे वह समुन्द्री जीवों के रूप में हो, चाहे ज़मीन पर रहने वाले छोटे से छोटे जीवन से लेकर हाथी, जिराफ आदि का जीवन हों चाहे अरबों की गिनती में मनुष्य जीवन हों, इन सब जानदार हस्तियों की वर्तमानता को नकारा नहीं जा सकता।

नेचर या विश्व नियम बद्ध है, अटकल पञ्चू कुछ नहीं है। नेचर के भीतर सब घटनाएं वा परिवर्तन नियमानुसार ही होते हैं। परिवर्तन का नियम नेचर के हर अस्तित्व पर लागू होता है। हर अस्तित्व प्रतिक्षण बदल रहा है। कोई अस्तित्व अच्छा परिवर्तन प्राप्त कर रहा है। अर्थात् विकास कर रहा है, कोई घटिया परिवर्तन हासिल करके विनाश की ओर अग्रसर है।

दूसरी बात याद रखने योग्य है कि विश्व के भीतर किसी स्थान पर भी निरोल पदार्थ अर्थात् Matter नहीं है, कहीं निरोल शक्ति भी नहीं है। अर्थात् नेचर के भीतर हर स्थान पर, और हर वजूद में Matter और शक्ति इकट्ठे पाए जाते हैं। निर्जीव पदार्थों में भी जड़ और शक्ति का अकाट्य सम्बन्ध है। जीवन रखने वाले तीनों जीवनधारी अर्थात् पौधे, पशु और इन्सान अपने जीवित शरीरों और जीवनी शक्तियों द्वारा जुड़े पाए जाते हैं। कोई पौधा, कोई पशु वा मनुष्य जीवनी शक्ति के बिना जिन्दा नहीं रह सकता। मनुष्य में से जीवनी शक्ति चले जाने से शरीर मुर्दा हो जाता है और वह दाह-संस्कार करने के ही योग्य हो जाता है। जीवनी शक्ति का शरीर से अकाट्य सम्बन्ध है। जितने प्रकार के जीव दुनियां में विद्यमान हैं, उतनी ही प्रकार की जीवनी शक्तियां भी वर्तमान हैं। भाव यह है कि जीवनी शक्ति की सत्ता को नकारा नहीं जा सकता। मनुष्यों में जो जीवनी शक्ति है, उसे ही आत्मा कहते हैं। एक सैल के जीव पहले नेचर के विकास क्रम में पैदा हुए। विकास क्रम में से गुजरते हुए लाखों वर्षों में मनुष्य की जीवनी शक्ति तक का सफर तय हुआ। यह एक लम्बी गाथा है।

मनुष्य की जीवनी शक्ति एक ठोस वस्तु है। जब हम जीवनी शक्ति को आत्मा कहते हैं, तो आत्मा अवश्य है, इसको भी नकारा नहीं जा सकता।

जब मनुष्य का अस्तित्व जीवनी शक्ति वा आत्मा पर निर्मर है तो आत्मा मनुष्य. में मूल वस्तु है। यही जीवनी शक्ति दो मानव सैलों के मेल के द्वारा स्त्री के गर्भ में बननी आरम्भ होती है, साथ ही शरीर

का निर्माण आरम्भ हो जाता है, जो 9 महीने में पूरे शरीर के रूप में विकसित हो जाता है। बच्चे के अगाज़ से लेकर उसके पूर्ण अस्तित्व बनने तक का ज्ञान अब मनुष्य के पास है। यदि जीवनीशक्ति में कोई विघ्न पड़ जाए तो, बच्चे का निर्माण रुक जाता है और गर्भपात हो जाता है। यह ज्ञान अब डाक्टरों को पूर्ण रूप से है। इसको कोई नहीं नकार सकता, इसका वैज्ञानिक आधार है। क्योंकि यह जीवनी शक्ति भी नेचर वा विश्व का ही अंश है, इस पर नेचर के ही जीने और मरने के अटल नियम लागू होते हैं। अनुकूल परिस्थितियों में ही जीवनी शक्ति जिन्दा रहती है और रह सकती है। प्रतिकूल परस्थितियों में इसका विनाश अवश्यम्भावी है।

परम्परा के तौर पर आत्मा का नाम जिस प्रकार शुरू से लिया जाता है, उसके सम्बन्ध में गहरा अन्धेरा वा अन्धकार फैला हुआ है। आत्मा को अजन्मा कहा जाता है, जो उपरोक्त सचाई के विपरीत है। आत्मा को निर्लेप समझा जाता है, पर हकीकत यह है कि प्रत्येक अच्छी वा बुरी क्रिया वा आत्मा पर असर होता है, वह परिवर्तन के नियम के अधीन है, परवर्तित होती रहती है। परिवर्तन के ऊपर नहीं है अर्थात् निर्लेप नहीं। इसका जन्म है, परिवर्तन है, विकास है, विनाश है। जैसे जीवित शरीर के जीने और मरने के नियम हैं। उसी प्रकार ही मनुष्य आत्मा वा जीवनी शक्ति के भी जीने मरने के नियम है और यह नियम अटल हैं।

मनुष्यात्मा (जीवनी शक्ति) जो और जीवनधारियों से बहुत विकास प्राप्त अवस्था में है, इसके भीतर भिन्न-भिन्न प्रकार की भावशक्तियां विकसित रूप में हैं। यह भाव शक्तियां ही मनुष्यात्मा की परिचालक शक्तियां हैं। यह भावशक्तियां परिवर्तन के अधीन हैं। इन भावशक्तियों का साक्षात ज्ञान ही वास्तव में आत्मज्ञान है। इस ज्ञान से वहीन मनुष्य के लिए हानि और दुखों का ग्रास होना आवश्यक है।

(बलबहादुर सिंह)

अक्लमंदी

एक कंजूस सेठ अपना परलोक सुधारने के लिए पैदल ही तीर्थ पर निकला। मोह-माया कदम-कदम पर उसके साथ लगी हुई थी। पीछे घरवाले क्या फिजूलखर्ची और लापरवाही कर रहे होंगे। सेठजी को यही चिंता खाए जा रही थी। तभी उन्हें शंका हुई- "शायद घर छोड़ने से पहले मैं बरामदे की बत्ती बुझाना भूल गया। अगर किसी ने उसे बंद नहीं किया तो। तब तो महीने भर की तीर्थ यात्रा के बाद बिजली का भारी बिल मुझे ही भरना होगा...."

सेठजी ने तब तक चार-पांच किलोमीटर की दूरी तय की होगी। उन्होंने फैसला लेने में देर नहीं की- "पहले घर लौटूं और बरामदे की बत्ती बंद करूं। तीर्थ यात्रा तो फिर से शुरू हो सकती है।" सेठजी पलट कर घर पहुंचे।

बेटें ने पूछा-पिताजी लौट कैसे आए? बरामदे की बत्ती जो जलती छोड़ गया था न...।"

बेटा-'पर वह तो मैंने आपके निकलते ही बंद कर दी थी। बेकार में चप्पल घिसी आपने।"

सेठ जी-कहां घिसी चप्पलें? मूर्ख समझा है तुने मुझे। देख चप्पल बगल में दबाकर लौटा हूँ।

सम्बन्धों में ही जीवन है।

("श्रेष्ठ कैसे बनें" गतांक से आगे)

परन्तु मैं केवल मानव जगत का ही अंश या अंग नहीं हूँ। मैं इस महान संसार का एक भाग हूँ, अंग हूँ। इस समाज से परे भी मेरा जीवन है। स्वयं मानवता का विकास पशु जगत से हुआ है। क्रमिक विकास के सिद्धान्त ने हमारे लिए यही खोज की है। इस ज्ञान ने हमारा सम्बन्ध मानव समाज के अतिरिक्त अन्य प्राणियों के साथ गहरा और विस्तृत कर दिया है। हमारा सम्बन्ध सब प्रकार के प्राणियों के जीवन से है, क्योंकि इस जीवन के क्रम का हम अंग हैं। हमारा इतिहास जीवन के विकास के क्षेत्र तक फैला हुआ है। हमारे रक्त से सम्बन्धित उच्चतम विकास को प्राप्त अन्य प्राणी भी हैं और उनके तथा हमारे बीच एक समान रक्त का प्रभाव है।

मुझे इस सत्य को विनम्रतापूर्वक स्वीकार करना चाहिए कि मेरा उद्‌भव और जन्म पशु जगत से हुआ है, यह सत्य है कि मानव पशु जगत से श्रेष्ठ है। उसमें समझने की शक्ति, गुण-दोष, विवेक और सुजनात्मक क्षमता-ये तीनों पशु जगत में नहीं पाई जाती। पशु जगत और मानव जगत की ये दूरी इस मिथ्या विश्वास को प्रोत्साहन देती है कि मानव परमात्मा की विशेष रचना है। मानव अपनी तार्किक बुद्धि से तथा पशु अपनी सहज प्रवृत्ति से मार्ग दर्शन प्राप्त करता है। जीव विज्ञान, मनोविज्ञान तथा समाजशास्त्र ने इस मिथ्या विश्वास और भ्रम की कलई खोल दी है और हमें इस निर्णय पर पहुँचाया है कि मनुष्य और पशु जगत में एक अनवरत प्रभाव और तारतम्य है।. . . . . .

मेरा पशु जगत से सम्बन्ध न केवल जीव विज्ञान के विषय तक सीमित है बल्कि यह मेरे प्रतिदिन के जीवन का भी भाग है। और मेरी नस्ल के जैविक इतिहास का एक अंश है। प्रतिदिन प्राप्त होने वाले दूध से बनी चीज़ें मुझे उस प्रिय जगत का स्मरण कराती हैं, यदि मैं नैतिक स्मरण दोष में ग्रस्त नहीं हूँ। जब मैं अपंग और शिशु अवस्था के सम्पूर्ण जगत को और सामान्य रूप से प्रौढ़ों को दूध से पोषित होता हुआ देखता हूँ तो मैं यह कैसे विश्वास कर लूँ कि पशु जगत का मेरे साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। पशु जगत से मानव को जीवन के अन्तिम क्षणों तक पोषण प्राप्त होता है। मैं अपने प्रति की हुई इन सेवाओं के कारण इस जगत से बन्धा हुआ हूँ। यह हम में से प्रत्येक के जीवन का अभिन्न और अभेद्य अंग है।

भोजन का प्रत्येक ग्रास जो मुझे प्राप्त होता है, मेरा सम्बन्ध उद्‌भिद् जगत से जोड़ देता है। मेरा पेट ही नहीं बल्कि मेरा हृदय भी इससे तृप्त होता है। बिना भोजन के रहने का परिणाम मैं भली भाँति जानता हूँ। इससे शरीर कमजोर होता है और आत्मा पीड़ा का अनुभव करता है।

जब मैं कहता हूँ कि मेरा जीवन वनस्पति जगत के जीवन पर आधारित है तो इसका अभिप्राय यह नहीं कि मैं केवल भौतिक जीवन की बात करता हूँ, इसमें मैं अपने मनो-वैज्ञानिक जीवन को भी सम्मिलित करता हूँ। वनस्पति जगत सौन्दर्य का जगत है। जब हम किसी बगीचे के सौन्दर्य के दर्शन करते हैं तो आत्मा कितने आनन्द का अनुभव करता

है। हमारा आत्मा प्रसन्नता से पुलकित हो उठता है जब यह सुगन्धि से पूर्ण रंग बिरंगे फूलों के दर्शन का अवसर प्राप्त करता है। हृदय का कोई कोना ऐसा नहीं होता जिससे फूलों के सौन्दर्य और सुगन्धि से आल्हाद उत्पन्न नहीं होता है . . . . . .

मेरा प्रत्येक श्वास जो मैं लेता हूँ यदि मैं चारित्रिक दृष्टि से संवेदन हीन नहीं हूँ, मेरा सम्बन्ध भौतिक जगत से जोड़ देता है। मेरा भौतिक जगत का सम्बन्ध इतना निकट का है कि यदि मैं वायु का सेवन नहीं करता तो जीवित ही नहीं रह सकता।.....

केवल मेरा जीवन ही नहीं जो भौतिक जगत पर निर्भर करता है बल्कि मेरा मनोवैज्ञानिक जीवन भी इस जगत पर निर्भर है। मैं रंगों को इसलिए देख सकता हूँ क्योंकि प्रकाश की किरणें मुझे इस जगत से प्राप्त होती हैं। शब्द मुझे इसलिए सुनाई देते हैं क्योंकि यह जगत शब्द की लहरों को वायु द्वारा मेरे कानों तक पहुँचाता है। मैं गन्ध को इसलिए अनुभव करता हूँ क्योंकि गन्ध का घ्राण इन्द्रियों से सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। रासायनिक तत्वों की उत्तेजना के कारण मैं स्वाद का अनुभव करता हूँ। मैं यह चिन्तन करता हूँ कि यदि भौतिक जगत के द्वारा उत्तेजना मुझे प्राप्त न होती तो मेरी क्या अवस्था होती। अपनी आँखों के रहते हुए भी मैं अन्धा होता, कानों के रहने पर भी मैं बहरा होता, नाक के होते हुए भी मैं घ्राणहीन होता। मैं अनुभव करता हूँ कि भौतिक जगत के बिना मेरी मानसिक अवस्था भी कितनी अभावग्रस्त होती। मेरा इसके साथ अत्यन्त दृढ़ सम्बन्ध है। इस जगत की प्रकाश की किरणों के बगैर मेरी आँखें बेकार होती, मेरे कान बिना शब्द की लहरों के व्यर्थ ही होते, उनके बिना मैं इन बोधों को कायम नहीं रख सकता, उनकी देखभाल नहीं कर पाता। इस सारी उपलब्धि से मेरा यह विश्वास दृढ़ हो जाता है कि भौतिक जगत से मेरा गाढ़ सम्बन्ध है . . . . . .

मैं अपने शारीरिक, मानसिक, नैतिक, सौन्दर्य से पूर्ण और आध्यात्मिक जीवन के लिए भौतिक जगत से सम्बन्धित हूँ और उसका उपकृत हूँ।

श्रेष्ठ होने का अर्थ है कि इस मूल सिद्धान्त के प्रति जागृत होना और भावनात्मक रूप से यह स्वीकार करना और इसकी सराहना करना कि मेरा जीवन भौतिक जगत, पशु जगत, वनस्पति जगत और मानव जगत के कारण विद्यमान है। यद्यपि इन चारों जगतों में विद्यमान अस्तित्व मुझे परिभाषित नहीं करते क्योंकि मेरी रचना इस संसार में सबसे अनुपम है, फिर भी मेरे अस्तित्व का कारण यह सारे जगत हैं। इन सबके अभाव में मैं कुछ भी नहीं हूँ। मेरा अस्तित्व केवल और केवल मात्र इन्हीं चारों जगतों के कारण है। . . . . . .

यह मानव जगत मेरा जन्म दाता, पालक-पोषक और विकास का साथी है। मैं इसके जीवन में प्रवेश कर सकता हूँ, इसकी सामाजिक और आर्थिक संस्थाओं और इसके सांस्कृतिक कार्यों को सुधार एवं परिष्कृत कर सकता हूँ और इनको नया रूप प्रदान कर सकता हूँ।

अपने समाज को जीवन के नये गुणों से युक्त कर सकता हूँ। पशु जगत से मेरा सम्बन्ध विभिन्न रूपों में है। अपनी सेवा के द्वारा मैं उनके साथ अपना सम्बन्ध प्रकट कर सकता हूँ। उनके वंश की उपयोगिता तथा सुन्दरता में सुधार करके मैं पालतू पशुओं को साथियों का सा सम्बन्ध दे सकता हूँ। मैं अपने आनन्द और भोजन के लिए वनस्पति जगत पर

निर्भर करता हूँ। मैं वनस्पति जगत के वंश की उसके फल और फूलों में और अधिक सुधार लाकर सेवा कर सकता हूँ। जब हम वनस्पति जगत के फलों और फूलों की आज की उपयोगिता और सुन्दरता की तुलना उसके उस समय के फलों और फूलों से करते हैं जब वे मनुष्य को अपने प्रारम्भिक जीवन में प्राप्त हुए थे तो इसका अनुमान आसानी से लगा सकते हैं कि मनुष्य उनके लिए क्या कर सकता है? प्राकृतिक जगत के अभाव में मैं सांस तक नहीं ले सकता। परन्तु मैं विज्ञान और कला के रचनात्मक ज्ञान द्वारा प्राकृतिक जगत की सुन्दरता और उपयोगिता को और अधिक बढ़ा सकता हूँ। नेचर के इन चारों प्रकार के जगतों और हमारे बीच में दोहरा सम्बन्ध है। उनकी प्रतिक्रिया अच्छे अथवा बुरे रूप में होती है और श्रेष्ठ होना सार्वजनिक भलाई के लिए परस्पर सहयोग के गुण को विकसित करना है।

संक्षेप में, मैं प्रकृति के लिए कोई सराहना का भाव नहीं रख सकता यदि मेरा विश्वास उस आदर्शवाद में है जो प्रकृति को मिथ्या स्वीकार करता है या एक बुराई के रूप में देखता है और आत्मा के लिए एक कैद मानता है।

एक नये दार्शनिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जो नेचर के अन्य अस्तित्वों की भावनात्मक पहचान और सराहना के लिए आवश्यक हालात प्रदान करता है। यह विश्वव्यापी दृष्टिकोण आत्मा और परमात्मा के अलौकिक संसार का त्याग करता है। इसमें यह स्वीकार करना आवश्यक है कि प्रकृति अपने में स्वयंभू परिपूर्ण है और कोई भी अस्तित्व उससे परे या बाहर नहीं है और न ही हो सकता है। मानव का व्यक्तित्व, उसका शरीर और आत्मा दोनों इसी प्रकृति में ही अपना जन्म, विकास और विनाश प्राप्त करते हैं। इसका सर्वोच्च भला नेचर के चारों जगतों के साथ अपना गाढ़ सम्बन्ध बोध करने में है और उनकी सराहना स्नेह, सेवा और कृतज्ञता में निहित है।

मुझे अवश्य स्वीकार करना चाहिए कि मेरे जन्मदाता पालनकर्ता रक्षक और शिक्षक मेरे माता-पिता हैं। मेरा यह विश्वास होना चाहिए कि मेरा विकास और उद्‌भव पशु जगत से ही हुआ है। पशु जगत की वह नस्ल जिसके द्वारा मानव जगत का प्रादुर्भाव हुआ है, उसका विकास भी केवल धरती और पौधों के द्वारा हुआ है। बिना इस धरती और पौधों के न तो पशु जगत का अस्तित्व सम्भव था और न ही मानव जगत का। अन्तिम विश्लेषण के रूप में मेरे जन्म की बुनियाद भौतिक जगत से है कि जिसने विकास क्रम में समुद्र में जीवनी शक्ति, तत्पश्चात वनस्पति जगत और उसके बाद पशु और अन्त में मनुष्य जीवन का प्रकाश किया है।

इसी प्रकार के दार्शनिक आधार पर मैं हृदय से यह स्वीकार कर सकता हूँ कि नेचर के चारों जगत मेरे प्राणों के प्राण हैं, मेरे रक्त का रक्त हैं। मेरे और इनके बीच एक अभिन्न, अविच्छिन्न सम्बन्ध व्याप्त है। किसी एक जगत से मेरा अलग किया जाना मुझे टुकड़े-टुकड़े कर देना है। इनके बिना मेरा कोई मूल्य नहीं है। मेरा अस्तित्व इन चारों जगतों के कारण ही है। इस प्रकार का दर्शन मेरी भावनाओं को विकास प्रदान कर सकता है कि इन चारों जगतों से मेरा अकाट्य सम्बन्ध है।

यह भाव यहाँ लिखने के योग्य है कि देवात्मा ने जब नेचर के इस सम्बन्ध को अनुभव किया तब

ईश्वर के अस्तित्व को अस्वीकार कर दिया। जब वह ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करते थे तो वह प्रकृति की वास्तविक्ता को तो स्वीकार करते थे परन्तु वह प्रकृति को ईश्वर की कृति के रूप में स्वीकार करते थे और ईश्वर के अस्तित्व को मुख्य जानकर उसी को ही अपना सर्वस्व और सर्वोच्च सार सम्बन्धी विश्वास करते थे। प्रकृति से वह अपना सम्बन्ध भ्रांतिक और दूसरी श्रेणी का मानते थे। अब एक अनीश्वरवादी के रूप में जबकि ईश्वर के अस्तित्व से उनका विश्वास समाप्त हो चुका है, अब इस सत्य के प्रकाश में उनका नेचर के जगतों से सच्चा सम्बन्ध स्थापित हो गया है और उनका काल्पनिक सृष्टा और प्रकृति के शासक से बिल्कुल सम्बन्ध समाप्त हो गया है। उन्होंने अपना सच्चा और वास्तविक सम्बन्ध सब प्रकार से सत्य और वास्तविक प्रकृति से अनुभव किया है।

इसी समय से उन में जागृति उत्पन्न हुई कि वह प्रकृति का एक भाग हैं। यही उनका सबसे निकटतम का सम्बन्धी है। उन्होंने यह भी अनुभव किया है कि उनके अतिरिक्त यह सम्पूर्ण मानवता से भी उनका सबसे निकट का सम्बन्ध है। उन्होंने इसके सम्बन्ध में और अधिक जानने और समझने की आवश्यकता को महसूस किया है। एक ही शब्द में कहा जाए तो उनके अन्दर प्रकृति के बारे में सच्चा ज्ञान प्राप्त करने की उत्कंठा जागृत हुई है।

उन्होंने प्रकृति के अनन्त सौन्दर्य, महानता और महिमा के दर्शन किये। उन्होंने लिखा है "यह मुझे पहले इतना वास्तविक और सत्यपूर्ण कभी नहीं लगा था जितना कि अब, इसके साथ अब मुझे अपना जितना घनिष्ठ सम्बन्ध दिखाई दिया इतना पहले कभी दिखाई नहीं दिया था। मैंने अनुभव किया है कि जीवन की उच्चता या नीचता मुख्य रूप से मनुष्य के भावों के उच्च या नीच स्वभाव या नेचर के विविध अस्तित्वों के प्रति उसके हृदय के आकर्षण या सम्बन्ध सूत्रों पर निर्भर है।"

"ईश्वर को मानकर भी और उसकी पूजा या उपासना व संध्या करके और नमाज पढ़कर भी लोग विश्व के विविध विभागों के साथ नीच सूत्रों से जुड़े रहकर दिनों दिन नीच बनते हैं। पशु और वृक्ष भी जो ईश्वर को नहीं मानते, विश्वगत अनुकूल सम्बन्धियों से जुड़कर बेहतर बनते हैं और प्रतिकूल सम्बन्धियों से जुड़कर बदतर हो जाते हैं। सम्बन्ध तत्व के इस महा अद्‌भुत ज्ञान ने विश्व को मुझ पर क्या अपने और क्या और अस्तित्वों के लिए जैसा सच्चा और सार सम्बन्धी प्रकट किया है, उसका मैं वर्णन नहीं कर सकता।

"प्रकृति से इस सम्बन्ध के लिए जिससे व्यवस्थित रूप से परिचय प्राप्त हो और अनुभव हो, ऐसे आत्मिक अभ्यास या यज्ञ की आवश्यकता अनुभव की गई। इसके लिए हम कुछ कर्तव्यों का पालन करें और कुछ अन्य प्रकार के कर्मों से परे (दूर) रहें, इस विषय में निम्न प्रकार के बारह यज्ञों का वर्गीकरण किया गया है "विश्वगत नाना जगतों के सम्बन्ध में यज्ञ विषयक साधनों को नियमित रूप से प्रचलित करने के लिए मुझे नितान्त आवश्यकता प्रतीत हुई।

"इस समय तक जिन बारह (12) यज्ञों के सम्बन्ध में कर्त्तव्य और वर्जित कर्म विषयक जो आदेश लिखे गये थे वह यह थे- (बाद में 16 यज्ञों के सम्बन्ध में आदेश दिए)

1. माता - पिता सन्तान यज्ञ
2. भाई - भग्नि यज्ञ

3. पति - पत्नि यज्ञ
4. भृत्य - स्वामी यज्ञ
5. देव गुरु यज्ञ
6. सेवक यज्ञ
7. प्रतिवासी यज्ञ
8. स्वदेश वासी यज्ञ
9. मनुष्य मात्र यज्ञ
10. उद्‌भिद् यज्ञ
11. पशु यज्ञ
12. जड़ यज्ञ

देवात्मा का विश्वास है कि नैतिक और आत्मिक जीवन का प्रारम्भ इन चारों प्रकार के प्राकृतिक जगतों के साथ अपना गाढ़ सम्बन्ध स्थापन करने और उनके प्रति सराहना, कृतज्ञता स्नेह और सेवा की भावना में है।"

मैंने कुछ हजार का परिशोध कैसे किया?

मेरा महा सौभाग्य कि कई वर्षों पहले मुझे देव धर्म की नायाब विज्ञान मूलक सत्संग का पता माननीय श्रीमति प्रीतम कौर जी सिद्धू (धर्म पत्नी स. बचित्र सिंह जी सिद्धू तहसीलदार) माता जी श्रीमती विद्या - वती जी खेड़ा की विशेष कृपा से मिला। मुझे इस नादर सत्संग से बहुत लाभ पहुँचा। इस सत्संग में बैठकर मेरे मोटे - मोटे पाप, शराब, मास, अंडा, मछली आदि चले गए। धर्म के विषय में झूठे विश्वास भी चले गए। अब मैं कई वर्षों से परम पूजनीय भगवान देवात्मा का सेवक हूँ और बकायदा सत्संग में खुशी - खुशी शामिल होता हूँ।

मैं बिहार का रहने वाला हूँ, मुझे ऐसी दुर्लभ सत्संग में आकर अपने उपकारी नजर आए हैं, मेरा व्यवहार बदल गया है। विशेष रूप से माता जी का उपकारी रूप नजर आया है। उनके प्रति मेरी अवज्ञाएं, लापरवाहीयाँ और भी कमीयां नज़र आई है। माता का अर्चन करने और उनके चराणों में प्रणाम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उनकी सेवा करके बेहद खुशी मिलती है। इसी प्रकार अपने चाचा जी के उपकार वा गुण नजर आए है, उनके साथ मेरा रिश्ता स्वर्गीय बन गया है।

पिछले वर्षों में मुझे अपनी बहुत सी और कमीयां भी नजर आती रही हैं। अपनी नीचता अर्थात् अपनी चोरी की घटना कई वर्षों से नजर आ रही थी। मैं रोग ग्रस्त हो गया था और मेरे बचने की कोई आशा नहीं थी।

मुझे अम्बाला छावनी के नेचर क्योर हस्पताल में दाख़िल करवाना पड़ा। कई महीनों के ईलाज के बाद मैं बिल्कुल तन्दरूस्त हो गया। मेरा यह नया जीवन इस हस्पताल की देन थी। फिर वही मुझे कुछ वेतन पर काम पर रख लिया गया। वहां से मैंने हस्पताल की कुछ कीमती टीन की चादरें चुरा ली और उनके ट्रंक बनवा लिए। कुछ गर्म कंबल भी वहां से चुरा लिए। सब्जियों, फलों आदि पर भी हाथ साफ करता गया। कुछ साल पहले से ही यह चोरियां मुझे दिखाई देकर दुख देती रही। मैंने अपने धर्म सम्बन्धी को बता भी दिया कि इस प्रकार मैंने चोरियां की हैं।

इस महोत्सव पर मुझे विशेष रूप से देवात्मा की ज्योति वा बल मिला। इससे मैं हिल गया। मैं जारोकतार रोने के लिए मजबूर होकर मेरी सभा में

बताने के लिए मजबूर हो गया कि मैं एक चोर हूँ।

महोत्सव के बाद उपकारी श्रीमान जी को मिला। और कहा कि मैं इस चोरी का परिशोध करना चाहता हूँ। श्रीमान जी ने अपनी खुशी का इज़हार किया और परिशोध करने के लिए मेरा हौसला बढ़ाया।

महोत्सव मुबारक के चन्द दिनों बाद मैं अम्बाला छावनी पहुँच गया, वहां मुझे एक पुराने साथ सेवक मिल गए। वह मुझे अपने साथ लेकर उस नेचर क्योर के हस्पताल पहुँच गए। वहां के इंचारज डाक्टर साहिब को मिले। दिल खोलकर अपनी चोरी का हाल ब्यान किया। और परिशोध के तौर पर मोटी रक्म उन्हें देने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि ऐसी बातें तो होती रहती हैं, इस रुपयों की कोई आवश्यकता नहीं। परन्तु हमारे बहुत जोर देनेपर इस कफारे की रक्त लेने के लिए माने। मैंने खुशी-खुशी 2000 रु० उन्हें दिए और उन्होंने रसीद हमें दे दी।

मेरा हृदय बार-बार आद्वितीय सत्गुरू देवात्मा के चरणों में झुक गया। आँखों से आंसूओं की धारा बहने लगी। मुझ पापी और चोर की गुरू की कृपा से मैल धुल गई। मेरे ऊपर से जैसे कई मन बोझ उतर गया। मैंने अपने आपको बहुत हलका अनुभव किया। मैं पाक खुशी से भरकर वापिस आया।

"धन्य-धन्य मेरा सत्गुरू जो कागों हंस करे।"

(एक सेवक)

सांच की जांच

आप पूरे परिवार के पोषण का भरपूर ख्याल रखती हैं, लेकिन कहीं मिलावट इस पोषण के बेअसर तो नहीं कर रही है?

खाद्य पदार्थों की शुद्धता की जांच, अब आपके हाथ खाद्य पदार्थों में मिलावट के और उससे होने वाले नुकसानों के बारे में हमें अक्सर सुनने को मिलता है। लेकिन उससे बचने के तरीकों के बारे में जानकारी नहीं मिलती। आइए, जानें कुछ आसान उपाय जिनके द्वारा खाद्य पदार्थों की शुद्धता की जांच आप खुद ही कर सकते हैं-मिर्च पाउडर पिसी मिर्च की एक चुटकी लेकर गीले कागज़ पर रखें, यदि कागज़ का रंग लाल हो जाता है, तो मिर्च शुद्ध नहीं है। हींग को पानी में घोलकर देखें, यदि पानी का रंग दूधियो हो जाता है, तो हींग शुद्ध है। शुद्ध हींग को आंच पर रखने से वह लाल हो जाती है।

एक चम्मच देशी घी और एक चम्मच हाइड्रोक्लोरिक एसिड को एक प्याली में मिलाएं। यदि थोड़ी देर बाद प्याले की तली पर लाल रंग दिखाई दे, तो यह तय है कि घी शुद्ध नहीं है।

हल्दी पिसी हल्दी में एक बूंद हाइड्रोक्लोरिकल एसिड डालें, यदि हल्दी का रंग बैगनी हो जाता है, तो इसका अर्थ है कि हल्दी में कृत्रिम पीला रंग मिलाया गया है।

शहद - शहद की एक बूंद ज़मीन में गिराकर उसे जलाएं। अगर शहद पिघलने लगे, तो शहद शुद्ध है।

दूध - दूध में चुटकी भर टिंचर आयोडीन मिलाएं। यदि दूध का रंग नीला हो जाता है तो दूध शुद्ध नहीं है।

हमारी हालत

हमारे महा सौभाग्य कि नेचर के विकासकारी विभाग ने देवात्मा को प्रगट कर दिया है। उन्होंने हमारे हित के कारण नई धर्म समाज स्थापन की है। इस आद्वितीय हित धारा से जुड़ना प्रत्येक मनुष्य का परम सौभाग्य है। हमें बहुत से जनों को यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है। भिन्न-भिन्न पक्षों में हमारा हित साधन भी हुआ है। हम इस हित धारा से जुड़े रहना भी चाहते हैं, जो हमारा हित होता रहे। गुरु महाराज ने हमें नई रोशनी प्रदान की है कि हम सब मनुष्य सुख अनुरागी वा सुख परायण हैं। इसीलिए हम सब पाप परायण वा मिथ्या परायण भी हैं। हमारे सुखों की लालसा हमें पैर पैर पर झूठ और पाप की ओर धकेलने के लिए है। हमने इस हालत से निकलना है, इस लक्ष्य में गुरु महाराज की निराली धर्म समाज ही एक मात्र हमारी सबसे बड़ी सहायक है और हो सकती है। इसलिए हम इसके साथ सदा जुड़े रहना चाहते भी हैं। गुरु महाराज ने हमें यह सच्चाई भी दर्शा दी है कि हमारे जीवन का लक्ष्य अपने नीच जीवन से अधिक से अधिक मुक्ति पाना है और सम्भंव उच्च भावनाओं को पैदा करना है और ऐसा करके अपने-अपने आत्मा की सच्ची रक्षा और सच्चा विकास करना है।

हम अपनी सुख लालसाओं से बार-बार परास्त होकर, बड़े सरगरम सेवक होकर भी अपने मोटे उपरोक्त लक्ष्य को बिल्कुल ही विसार बैठते हैं और अपनी धर्म समाज के सम्बन्ध में भी ऐसी क्रिया खुशी खुशी करते हैं, जो हमारे बहुत बड़े अहित वा हानि का कारण होती हैं।

कुछ समय पहले हमें मनुष्य प्रकृति का कुछ अनुभव हुआ और पता लगा कि हमारी सुख लालसा की प्रकृति हमें अपनी हित धारा अर्थात धर्म समाज के प्रति कैसी अवस्था धारण करवा देती है। उस अनुभव को अपने प्यारे पाठकों के साथ बाँटने की आज्ञा चाहते हैं।

कुछ समय पहले अपने बहुत से धर्म सम्बन्धियों को 'हित-स्त्रोत' वा 'धर्म जीवन' के सम्बन्ध में बकाया चन्दें की ओर उनका ध्यान फेरने के लिए प्रार्थना पत्र लिखे। उन पत्रों के सम्बन्ध में हमें दो प्रकार की प्रतिक्रियाएं मिली। एक तरफ कुछ धर्म सम्बन्धियों ने उपरोक्त पत्रों का स्वागत किया, पत्र लिखने के लिए हार्दिक धन्यवाद दिया और सैंकड़ों रु० चन्दें के रूप में हमें दिए या मनीआर्डर भेजे और सन्तुष्टि पाई।

दूसरी तरफ बहुत सारे धर्म सम्बन्धियों ने उपरोक्त पत्रों का कोई नोटिस नहीं लिया और चुप ही रहे। फिर कुछ धर्म सम्बन्धियों को विशेष सम्मेलनों पर मिलने पर या हमने खुद जाकर, व्यक्तिगत तौर प्रार्थना की, उनकी तरफ से जो प्रतिक्रिया प्राप्त हुई वह हमारी मनुष्य प्रकृति का कुछ सच्चा अनुभव करवा सकती है।

एक हमारे प्यारे बहुत माननीय प्राय: 18 - 20 वर्ष पुराने साथी सेवक जो अच्छी सरकारी पोस्ट पर शोभयामान हैं और जो बी. ए. पास हैं, सामाजिक ऊंचे पदों पर भी शोभयामान रहते हैं, को हम मिले और प्रार्थना की कि हम आपको दो पत्रिकाएं भेजते हैं,

उन्होंने कहा कि जी हां बहुत अच्छी पत्रिकाएं हैं। हमने पूछा कि क्या हम उन्हें जारी रखें या बन्द कर दें। उन्होंने कहा कि नहीं, बन्द क्यों करनी हैं, उनसे बड़ा लाभ होता है, जरूर जारी रखें। फिर उन प्यारे धर्म सम्बन्धी को प्रार्थना की कि 18 साल के लगभग से हम दोनों पत्रिकाएं भेज रहे हैं, बड़ी कृपा हो यदि आप उसका चन्दा भेज सकें। उनकेसाथ उनके एक और साथी धर्म सम्बन्धी भी खड़े थे, उनकी तरफ से भी कभी चन्दा नहीं मिला था। दोनों धर्म सम्बन्धियों ने चन्दा देने का वायदा किया। एक धर्म सम्बन्धी ने तो 18 वर्षो का चन्दा 100 रु० भेजने की कृपा की, दूसरे धर्म सम्बन्धी ने एक वर्ष और बीत जाने पर भी कोई रिसपौंस नहीं दिया।

एक और देव समाजी परिवार के रिटायरड प्यारे साथी सेवक जी से पिछले 5-6 वर्षों की पत्रिकाओं का बकाया चन्दा देने की प्रार्थना की, उन्होंने कहा कि आप तो हमारी दुकान के पते पर पत्रिकाएं भेजते थे, मुझे तो नहीं भेजते। यह पूछने पर कि पढ़ते तो आप ही हो, आप पुराने सेवक हो, संस्थाओं के पदधारी हो, आप ही कृपा कर दो। तो उन्होंने मजबूरी में 50 रू० दे दिए और अपना पीछा छुड़ा लिया।

एक और पुराने प्यारे धर्म सम्बन्धी, जिनके कई प्रशंसा भरे हमें पत्र भी मिलते हैं, जिन्होंने हमेशा पत्रिका भेजने के लिए धन्यवाद दिया है, जिन्होंने और भी 2-3 जगह अपने निकटी जनों को पत्रिकाएं भेजने के लिए प्रार्थना की थी। वह उच्च शिक्षा प्राप्त और उच्च पदों पर सुशोभित भी रहे है। उन्होंने हमें लिखा कि मैं जल्दी चन्दा भेज रहा हूँ, बहुत देर बाद हमने एक धर्म सम्बन्धी को उनके पास भेज दिया। उन्होंने कहा कि मैं खुद चण्डीगढ जाकर चन्दा देकर आऊंगा। इस पर भेजे गए साथी सेवक ने प्रार्थना की कि इन छोटी-छोटी बातों के लिए हमें श्रीमान जी को चक्कर में नहीं डालना चाहिए, मैं आपकी जगह पैसे अदा कर देता हूँ, आपसे मैं फिर ले लूंगा, तो कहीं 500 रु० उन्होंने दिए और 15-18 वर्ष के चन्दे का इस रक्म में हिसाब चुकता कर दिया और उसके बाद पत्र लिख दिया कि यह पत्रिकाएं बन्द कर दी जाएं।

एक और धर्म सम्बन्धी, जो बड़े पुराने सेवक हैं, उनके पास भी चन्दा लेने के लिए एक जन को भेजा, उन्होंने हंसकर जवाब दिया कि मैं महोत्सव पर खुद जा ही रहा हूँ, वहां चन्दा भी दे दूंगा। भेजे हुए आदमी के कहने पर कि कुछ तो दो, उन्होंने 100 रु० का नोट देकर तसल्ली कर ली और कहा कि यह ले जाओ, महोत्सव पर जाकर, श्रीमान जी को मिलकर सारा हिसाब चुकता कर दूंगा। महोत्सव गुजर गया, परन्तु उस धर्म सम्बन्धी के दर्शन नहीं हुए।

एक बार एक अच्छे बुर्जुग सेठ, पुराने धर्म सम्बन्धी ने स्वयं सभा में भाव प्रकाश किया कि हम ऐसे सेवक हैं कि सेवकों का चन्दा देना पड़ेगा, इसलिए घर के कई जनों को सेवक नहीं बनने देते। उससे एक दो साल बाद उस सेवक ने 70 वर्ष की श्रद्धालु पत्नी को सेविका बनाया था। इस प्रकार उन्होंने 50 वर्ष का जैसे नियत दान बचा लिया था।

एक महोत्सव पर खाने पर 20-25 रू० के स्थान 10 रू० की टिकट लगाई जाती है। एक ही टिकट को बार-बार इस्तेमाल करने की भी रिपोर्ट

मिली थी।

यह घटनाएं हमारी प्रकृत हालत को भली भांति प्रगट करती हैं।

पत्रिकाओं का चन्दा प्रतिवर्ष देना, समाज की पहली श्रेणी की प्रतिज्ञा में शामिल हैं। हम जो पत्रिका आपको 50 रु० में भेजते हैं, उस पर समाज के 80 - 85 रू० खर्च होते हैं। अब सोचो कि देवात्मा के सेवक होकर हम क्या व्यवहार अपना लेते हैं। हमारी प्रकृति हमें यह भी भुला देती है कि हम किस लक्ष्य को लेकर समाज से जुड़े हैं। हम मोटे तौर पर ईमानदारी से भी हाथ धो लेते हैं और सन्तुष्ट रहते हैं।

हमारी उपरोक्त प्रकृति इस बात को साफ कर देती है कि हम धर्म प्राप्ति की कितनी भावना रखते है और ढोल बजा बजाकर बताती है कि हम धर्म प्राप्ति और नीच जीवन से मुक्ति प्राप्त करने के कितने चाहवान हैं। हम इस मिथ्या विश्वास में जीते हैं कि हम उच्च हैं, नेक हैं और उच्च बनना चाहते हैं। पुराने सेवक नियत दान वा चन्दा अखबार के विषय में एक बार भी कहलवाना नहीं चाहते थे।

ईमानदारी और पवित्रता व्यवहारिक भावों में शुमार होते हैं। यह धर्म भाव नहीं वा सात्विक भाव नहीं हैं। इनकी अवर्तमानता से हमारे व्यवहार मलीन और गन्दे हो जाते हैं और ऐसे व्यवहार दूसरों को भी समाज के निकट होने के लिए उत्साहित नहीं करते। हमें समाज का हानिकारक अंग बना देते हैं।

काश! हम सब प्यारे धर्म सम्बन्धियों को अपनी - अपनी हालत देखने के लिए देवात्मा की आद्वितीय रोशनी प्राप्त हो सके। हम सबको अपने - अपने दोष दिख सकें और हमें उन दोषों से निकलने का धक्का लग सके, तभी हमारा सच्चा हित सम्भव हो सकेगा। ऐसी हमारी अपने लिए और अपने सारे धर्म सम्बन्धियों के लिए ज़ोरदार कामना है।

मुझे मेरी हालत दिखाओ हे भगवन,
मुझे नाश से तुम बचाओ हे भगवन।
मेरी नीच रुचियां मेरा नाश करती,
किसी विध से उनसे छुड़ाओ हे भगवन।
बुराई से कर घृणा उत्पन्न मुझमें,
बुराई से मुझको छुड़ाओ हे भगवन।
धर्म शक्तियां मुझमें तुम पैदा करके,
भलाई में मुझको लगाओ हे भगवन।

निर्भयता से सच्चाई का साथ दो।

हम किसी संस्था में, किसी दफ्तर में, किसी समाज में काम करते हैं, वहां पर बहुत सी बातों को हम ठीक नहीं समझते, हम में से कितने हैं जो अपने विचारों को निडरता और उच्छवास के साथ पेश कर सकते हैं। हम अपने साथियों के साथ उसके विषय में चर्चा करते रहेंगे, परन्तु जहां बोलने से कुछ लाभ हो सकता है, या सुधार हो सकता है, वहां चुप रहेंगे या गल्त फैसले पर भी अपनी हूँ, हां कर देंगे। जबकि हमारी अन्दर की आवाज़ उसके उल्ट होती है।

हम ऐसा क्यों करते हैं? हम गल्त फैसले के विरूद्ध चुप क्यों रहते हैं? हमारा आत्म-सम्मान उस समय कहां खो जाता है? हम यह अनुभव क्यों नहीं करते कि हमारी चुप्पी हमारी संस्था वा अन्य लोगों को हानि पहुँचा सकती है।

क्या हम दूसरों से डरते हैं? क्यों हमारे में इतना हौसला नहीं कि गल्त को गल्त कह सकें? क्या हम शान्ति रखने का ढोंग रचते हैं या अन्दर से अपनी विरोधता होने से डरते हैं? हमारे व्यक्तिगत फैसले, सोच और ठीक सोच दवाब के आगे चुप्पी क्यों साध लेते हैं?

इन सब का जवाब हम अपने-अपने जीवनों से दे सकते हैं? साधारणता जो boss या Head होते हैं उनके आगे yesman बन जाते हैं, इससे संस्थाओं को, समाजों को महा हानि पहुँचती है। तरक्की रुक जाती है। सुधार की गुंजाईश ही नहीं रहती। यह भी सच है कि आपके सुझाव आपके फैसले सदा हर प्रकार से समाज के हित में हों, अपने स्वार्थ वा अपने अंह की तृप्ति के लिए बोलना कतई लाभदायक नहीं हो सकता। आपके विचार ठोस आधार पर होने चाहिए। यदि आपका फैसला ठीक है, आपका विश्वास ठीक है, आपको उसमें समाज वा संस्था का हित निहित लगता है, तो उसमें चुप रहना या गल्त फैसले में हां से हां मिलाना या दूसरे को केवल बड़ा समझकर उसके गल्त विचार के बारे में न बोल सकना, कायरता है, धोखा है और अपने आप से भी गद्दारी है। अगर हम ठीक फैसले पर अडिग रहते हैं, तो हवा का रुख बदल सकते हैं।

यदि महात्मा गांधी अंग्रेजों के पिटठू बने रहते तो वह बहुत धन वा शोहरत पा सकते थे। जेलों के स्थान पर वह मखमली गद्दों पर सोते, जैसे कि अनगिणत बड़े-बड़े जनों ने किया, परन्तु परिणाम क्या होता हमारी आज़ादी और पता नहीं कितने वर्ष पीछे पड़ जाती। एक निहायत कमजोर शरीर रखने वाले, बहुत शर्मीले नौजवान को सचाई के लगाव ने निडर बना दिया और अंग्रेजों के सम्राज्य की जड़ें हिला दी। सचाई और निडरता के आगे बड़े-बड़े किले ढह जाते हैं, परन्तु हम भीरू बनकर किसी और के आगे आने का इन्तजार करते रहते हैं, ताकि हम पर कोई आँच नहीं आए, परन्तु दिल ही दिल में अपने आपको अपनी संस्थाओं का हितकर्ता समझकर और हरदिल अजीज बने रहकर और अपने आपको फिर भी ठीक-ठाक देखकर फूले रहते हैं।

अब हम यदि निरीक्षण करें कि कौन से भाव हमें सच्चाई को निडरता से साथ नहीं देने देते तो मुख्य रूप से :-

1. स्वार्थ :- जिसके कारण हमें डर बना रहता है कि दूसरों के विरूद्ध विचार प्रगट करके हमारा कोई सुख छिन सकता है, वह सुख चाहे पदवी का हो, रहन सहन का हो, पैसे का हो, अन्य लाभ का हो या अपनी सुन्दर वा आज्ञाकारी छवि बनाए रखने का हो।

2. पक्षपात :- हम एक-एक साथी के साथ इस कदर अनुचित बन्धन से बन्ध जाते हैं कि उसके विरुद्ध बोलने का हौसला ही नहीं करते, किसी बात को स्पष्ट रूप से गल्त देखकर भी चुप्पी साधे रखते हैं और झूठ का साथ देते हैं, फिर भी अपने आपको ठीक-ठाक महसूस करते हैं। इससे बढ़कर कपटता क्या हो सकती है? अपने साथियों का पक्षपात, उनको खुश रखने के लिए उनकी हां में हां मिलाने से, गल्त बात पर चुप रहकर झूठ का साथी बनने से हम किसी संस्था के लिए बहुत हानिकारक बनते हैं, उसका परिणाम आज हर क्षेत्र में देखने को मिलता है। बड़े-बड़े नेतागण इस झूठी चापलूसी वा अपने-अपने गुट वा पक्षधरों को पक्षपात करके बड़े-बड़े पदों पर तो रह सकते हैं, परन्तु देश का बेड़ा गरक कर रहे हैं।

3. बुराई के प्रति भय, दुख और घृणा का आभाव :- किसी बुराई को देखकर चुप रहना या हूँ, हां करके उस बुराई को होते देखते रहना और निडरता से उसके विरुद्ध खड़े न हो सकना, दर्शाता है कि हमें वास्तव में बुराई के प्रति घृणा नहीं, दुख नहीं, केवल छलावा है वा अन्य निजी सुखों वा लाभों का आकर्षण हमारे ऊपर हावी है। झूठ बोलना वा झूठ का साथ देना हमें कायर बना देता है। फिर सचाई को प्रगट करने का हौसला पस्त हो जाता है। कई बार दूसरे जन आपको झूठ वा बुराई का एक बार साथी बनाकर आपको इतना कमजोर कर देते हैं कि फिर आप में सचाई का साथ देने का साहस घटता जाता है और आप उन्हीं के चापलूस बनकर रह जाते हैं।

परम पूज्यनीय भगवान देवात्मा ने जिन्होंने सचाई भलाई को लाना ही अपना मिशन बनाया था और उसके लिए असह्य त्याग किए, उनके शिष्य होकर यदि हम उनकी शिक्षा को सुनने सुनाने तक ही सीमित रखें और जब सचाई का साथ देने का मौका आए तो कायरों की तरह पीछे हट जाएं, झूठ और बुराई को पनपने दें वा उसमें सहायक बनें, तो हम उनके कैसे सेवक हैं। उसका स्वयं ही अनुमान लगा सकते हैं।

सुरजीत बराड़

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

बेटी का स्थान

(एक माँ का बेटी के नाम पत्र)

माँ, बनने पर तुम्हें बहुत-बहुत बधाई, सृजन में ही नारी की पूर्णता है, उस पर 'बिटिया' यानी सोने पर सुहागा, 'बेटी' यानी अपनी ही प्रतिकृति को गढ़ना, उसे अपने मनचाहे सांचे में ढालना, सजाना संवारना, तराशना और संपूर्णता देना। एक अनिर्वचनीय सुखद अनुभूति है। आज मेरी नन्ही-सी गुड़िया स्वयं 'मां' बन गई है।

'लाडो' आज मेरा मन तुम्हारे आस-पास ही भटक रहा है। छुटिट्यों में तुम्हारे आने पर जब 'बाई' नहीं आई थी, तुमने कितनी सहजता से घर की साफ-सफाई की जिम्मेदारी संभाल ली थी परन्तु सामने आने वाली आंटी के पूछने 'माँ' के घर की सफाई भी हो जाएगी और एक्सरसाइज भी तुमने उसी सहजता से उत्तर दिया था। तुम्हारा यह उत्तर मुझे अंदर तक कचोट गया था। क्या यह घर सिर्फ मेरा है, जिस घर में तुमने बाइस बसन्त देखे हैं, उस पर इतनी आसानी से तुमने अपना अधिकार कैसे खो दिया?

बाजार जाते समय स्कूटर में पेट्रोल भरवाने के लिए तुम्हारे पापा के पैसे देने पर नहीं, पापा मेरे पास हैं।' कहकर तुम्हारा इन्कार करना, तुम्हारे पापा को भी कचोट गया था, यही नहीं विवाह के कुछ समय बाद ही जब तुम मिलने आई थी, चलते समय तुमने मुझे पूछा था, 'ममा, वहां मेरे पास घर पहनने के लिए आधी बांह के स्वेटर नहीं हैं आप कहें तो अपने एक दो स्वेटर ले जाऊं।' 'जो तुम्हें पसंद है, ले जाओ, इसमें पूछने की क्या बात है?' मेरे जवाब देने पर तुमने बड़ी मासूमियत से कहा था, 'अब मेरी शादी हो गई है, आपसे बिना पूछे तो मैं यहां से कुछ भी नहीं ले जा सकती न? तुम्हारे पराएपन का अहसास तो मुझे कई दिनों तक रुलाता रहा था।

संजना, तुम्हारा भाई जो तुमसे पाँच साल बड़ा है आज भी उसी अधिकार से अपनी मांग हमारे सामने रखता है, तो तुम इतनी जल्दी पराई कैसे हो गई, हमने तो तुम दोनों भाई बहनों की परवरिश में कोई अंतर नहीं किया, पर नहीं....। शायद हमारी पीढ़ी समानता का मतलब दोनों को एक-सा खान-पान, रहन-सहन, शिक्षा-दीक्षा देकर उनमें आपसी होड़ पैदा करना समझती रही है, पर संस्कारों में हम सब भी जैसे के तैसे ही हैं। यानी 'लड़की पराया धन है' तभी तो जॉब मिलते ही तुम्हारे मानसिक रूप से तैयार न होने पर भी तुम्हारे से हाथ पीछे करके अपने उत्तरदायित्व से मुक्त होना ही हमने श्रेयस्कर समझा।

संजू, यह पत्र मैं तुम्हें एक विशेष उद्देश्य से लिख रही हूँ, हमारे अधूरे काम को आगे बढ़ाना अब तुम्हारी पीढ़ी का कर्त्तव्य है। लाडो, बेटी कभी भी पराया धन नहीं है, वह मां बाप की अपनी और ताउम्र अपनी ही रहती है। बस, विवाह के बाद उसकी भूमिका बदल जाती है। वह बेटी से बहू पत्नी और मां के रूप में नारी की सम्पूर्णता को प्राप्त हो जाती है। इसलिए उसका मायका उसकी 'मां का घर' नहीं, ताउम्र अपना घर ही रहता है, इसी विश्वास से बेटी की परवरिश करना।

तुम्हारी मॉम

विरोध में भी रखें बातचीत की गुंजाइश

स्वार्थ और अहं से दुश्मनी का बीज पनपता है। इसलिए दुश्मनी में भी बातचीत की गुंजाइश बनाए रखें।

फिल्म 'जोधा अकबर' का एक खूबसूरत डायलॉग है,

या खुदा मेरे शमशीर के साए में हर बार मेरे अपने ही लोग क्यों आ जाते हैं।

इस महान मुगल सम्राट अकबर के पात्र से कहलाया गया है। इसमें हम सबकी जिंदगियों की एक कड़वी सच्चाई भी मौजूद है। अभी तक ऐसा कोई नहीं हुआ है, जिसके दुश्मन न हों, जिसका विरोध न हुआ हो। इस दुश्मनी की शुरूआत होती है हमारे अपने ही लोगों से। तो सवाल यह है कि ऐसा क्यों होता है? यदि आपकी किसी से दुश्मनी होनी होगी, तो वह उसी से होगी, जो आपका कभी दोस्त रहा होगा। जिसे आप जानते तक नहीं, उससे दुश्मनी कैसे मुमकिन है। जाहिर है कि साथ-साथ रहने से एक-दूसरे की अच्छाइयों और बुराईयों को हम अच्छे से जानने लगते हैं। थोड़ी बहुत ऊंच-नीच के साथ सब कुछ लगभग ठीक-ठाक चलता रहता है। लेकिन जैसे ही दोनों के बीच स्वार्थ आता है, अहं आ जाता है, वैसे ही दोस्ती दुश्मनी में तब्दील होने लगती है।

आपको यह सोचकर अजीब लगता है कि कहां तो दोनों एक दूसरे के बिना एक पल भी नहीं रह पाते थे और कहां एक पल भी साथ रहने को तैयार नहीं है। जिंदगी का यही यथार्थ है, जिसे स्वीकार करना चाहिए। यदि बीच धरती की परत को तोड़कर रोशनी का सामना करता है तो साथ ही उसकी जड़ें अंधेरे की यात्रा के लिए भी निकलती हैं। जो व्यक्ति जिन्दगी के इस सत्य से आंख मिलाने की ताकत रखेगा, वह दुश्मनी को दुश्मनी न मानकर उसे विरोध में बदल देगा। वह इससे दुखी नहीं होगा। ऐसे में जब कभी उससे मुलाकात होगी, तो बात होने की गुंजाइश बची रहेगी।

निःस्वार्थ त्याग

दस आदमी और एक औरत हेलीकॉप्टर से लटक रहे थे। रस्सी कमजोर होने के कारण एक साथ इतने लोगों को लेकर चलना संभव नहीं था। कम से कम एक आदमी को रस्सी छोड़ना ही था नहीं तो उससे बाकी के आदमियों की जान को खतरा था। इस काम के लिए कौन अपनी जान जोखिम में डालेगा इस बात पर गहन विचार मंथन चल रहा था। तभी उस महिला ने अचानक भावुक होकर कहा कि वह स्वेच्छा से रस्सी को छोड़ने के लिए तैयार है, क्योंकि त्याग करना स्त्री का स्वभाव रहा है। वह रोज ही अपने घर अपने बच्चों और पति के लिए निःस्वार्थ भाव से त्याग करती रहती है। जैसे ही महिला ने अपनी बात समाप्त की, सभी पुरूष एक साथ ताली बजाने लगे।

शुभ संग्राम

संगरूर :– 9 अप्रैल को चण्डीगढ़ से श्रीमान बलदेव सिंह जी, डॉ. विनोद खेड़ा जी, श्रीमान ओम प्रकाश वर्मा जी यमुना नगर सब शाम तक यहां मन्दिर में पहुँच गए। रात को 7.30 बजे एक सभा की गई। सभा में बताया गया कि मनुष्य देवी देवताओं, गुरूओं वा परमात्मा को मानकर, पूजा पाठ करके भी महा भयानक गतियां करता है। अभी कुछ दिन पहले चण्डीगढ़ में होमगार्ड के सिपाही ने गोली से पहले पत्नी, फिर 19 के नौजवान इंजनियर बन रहे बेटे, फिर अपने आपको भी खत्म कर लिया। इस प्रकार की और घटनाएं सुनाई। यह घटनाएं परमात्मा नहीं करवाता। मनुष्य के अपने भाव करवाते हैं। नीच सुखों के इश्क करवाते हैं। इनके प्रति मनुष्य अन्धेरे में है और बेसुध है। इनकी जानकारी के बिना मनुष्य का भला नहीं हो सकता। गुरू महाराज मनुष्य को उसकी नीच रुचियों के प्रति जाग्रित करते हैं और अधिकारी जनों को बचाकर उनको भलाई के मार्ग पर डालते हैं।

10 अप्रैल सुबह की सभा में धर्म सम्बन्धियों को सच्चे साधन के विषय में बताया गया। सच्चे प्रणाम के विषय में बताया गया।

रात की सभा में बताया गया कि मनुष्य नीच सुखों से पागल होकर बुरी तरह बर्बाद हो रहा है। मिथ्या और पाप का शिकार हो रहा है। उसके धर्म के साधन उसको बर्बादी से नहीं बचा सकते। इसलिए देवात्मा सत्गुरू की आद्वितीय शक्तियों के प्रभावों की आवश्यकता है। गुरू महाराज अपने आद्वितीय प्रभावों के द्वारा बड़े-बड़े पापियों को सुधार रहे हैं। घटनाओं के द्वारा यह सच्चाई बताई गई।

11 अप्रैल सुबह की सभा में बताया गया कि आत्मा की खुराक, उच्च वा देव प्रभाव वा विशुद्ध सेवा है। इसकी परम अवश्यकता बताई गई। उपस्थित जनों को सेवा करने के कई साधन बताए गए। एक जन ने मन्दिर के सामने हररोज़ किताबें बेचने के लिए उत्साह अनुभव किया। उन्होंने सुबह शाम कई घण्टे यह सेवा की।

रात की सभा में हजारी 15 - 16 की थी। इस सभा में बताया गया कि गुरूओं, देवी देवताओं के साथ जुड़ी हुई करामातें झूठी हैं। अप्राकृतिक बातें होना असम्भव है। समाज की शिक्षा जो विज्ञान मूलक है, उसका मोटा-मोटा ब्यान किया गया। इस सभा में जगदीष जी ने भजन गाए।

12 तारीख सुबह की सभा में बताया गया कि मनुष्य बीवी, बच्चों का गुलाम है, परन्तु उसे नज़र नहीं आता। गुरु महाराज कर्मचारियों को कहते थे कि तुम बीवी, बच्चों के गुलाम होने के कारण मेरे मिशन में सेवाकारी नहीं होते। इस गुलामी से निकलने की सख़्त जरूरत है। गुरू की ज्योति और तेज के बिना यह गुलामी नज़र नहीं आती और न ही मनुष्य इसमें से निकल सकता है।

शाम की सभा में बताया गया कि मनुष्य को सम्बन्धों में जीना नहीं आया। गुरू महाराज ने सम्बन्धों को तोड़ने नहीं जोड़ने की शिक्षा दी है। वह सम्बन्धों को सुधार कर इस पृथ्वी पर स्वर्ग पैदा करते हैं। सुन्दर उदाहरणों द्वारा इस आद्वितीय कारज का ब्यान

किया गया।

13 तारीख सुबह की सभा इस दौरे की आखरी सभा थी। इसमें पहले गुरु महाराज का अर्चण किया गया, फिर बताया गया कि विकास का नियम क्या है? बर्तनों, फसलों, सफरों के साधनों, पशुओं, मनुष्यों में विकास की अनोखी गाथा है। विकास क्रम में विशुद्ध परोपकारी जनों का विकास हुआ है, आगे विकास क्रम में सत्य और शुभ अनुरागी देवात्मा का विकास हुआ है। हमें ज्ञान कितना भी हो पर सेवा के बिना आत्मा का भला नहीं हो सकता। परोपकारी जनों की नेचर में अवश्य सहायता होती है। सभा के बाद हाजरीन में लड्डू बाँटे गए।

भटिण्डा :– एक उच्च धर्म सम्बन्धी की इच्छा अनुसार भटिण्डा जाने और कुछ सभाओं में बोलनेका सौभाग्य मिला, इससे मेरा स्वयं का बहुत भला हुआ। अखबारों के चन्दे आदि भी वसूल हुए।

रूड़की में 20, 21 और 22 अप्रैल तक कई धर्म सम्बन्धी 32 Civil Line के मन्दिर में ठहरे और सभाएं की गई। जगदीष जी ने भजनों का गान किया। यहां पर श्रीमान बलदेव सिंह जी, जगदीष जी, सीता राम जी, ओम प्रकाश जी वर्मा, नरेन्द्र दत्त जी धीमान खतौली, मेरठ से नरिन्द्र चौधरी, कंवरपाल जी मुज्जफर नगर से, राकेश जी सहारनपुर से पहुँचे। कुछ लोकल जन भी आकर शामिल हुए। देहरादून से राजेन्द्र जी, सिंगला साहिब पति पत्नी, मलहोत्रा साहिब, जैन साहिब आदि सभाओं में आते रहे। 200 रु० अखबारों का चन्दा, 100 रू० दान प्राप्त हुआ। साथी बार-बार आने के लिए प्रार्थना करते रहे। छोटा सा संग्राम काफी सफल रहा।

खतौली :– सभा के बाद 6 जन खतौली पहुँचे, वहाँ एक जन कुछ जगह दान करना चाहता है उसके विषय में विचार किया।

तीसंग :– वहां से पार्टी तिसंग पहुँची, वहां कंवरपाल जी ने 2 बजे सभा रखी थी। गांव वासी सैंकड़ों जनों ने सभा सुनी। देवात्मा के कारज के विषय में बताया। सभा के बाद वर्मा जी और जगदीष जी श्रीमान जी के साथ आए और 9 बजे चण्डीगढ़ पहुँचे।

चण्डीगढ़ :– 20 अप्रैल को सभा चण्डीगढ़ में हुई, भेंट का साधन भी किया गया।

(एक सेवक)

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh - 160022*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts